प्रश्न. गीतिकाव्य के कितने भेद हैं? गीतिकाव्य के लक्षण लिखकर एवं मेघदूत का स्थान निर्धारित कीजिए।

(वर्ग 4) प्रथमपत्र खण्ड (ग) Part I Paper 2

प्रश्नः {खण्डकाव्यस्य / गीतिकाव्यस्य} कतिभेदाः? गीतिकाव्यस्य (खण्डकाव्यस्य) लक्षणं लिखित्वा मेघदूतस्य स्थानं निर्धारयताम्। 1×60

उत्तरम्- गीतिकाव्य के दो भेद हैं- प्रबन्धगीतिकाव्य तथा मुक्तकगीतिकाव्य। पुनः मुक्तक के दो भेद हैं लौकिकमुक्तक एवं धार्मिकमुक्तक। धार्मिक मुक्तक के अन्तर्गत विविधस्तोत्रकाव्य आते हैं तथा लौकिक मुक्तक तीन प्रकार के होते हैं- शृंगार, नीति, वैराग्य। संस्कृत के अलंकारिकों ने काव्य को दो खण्डों में विभक्त किया है। दृश्य एवं श्रव्य। श्रव्य के भी दो भेद- गद्य एवं पद्य। पद्य के पुनः खण्डकाव्य तथा महाकाव्य- इन दो भागों में बाँटा है परन्तु कहीं भी गीतिकाव्य का उल्लेख संस्कृत काव्यशास्त्र में उपलब्ध नहीं है। प्रो० मैक्डोनाल्ड ने खण्डकाव्य को ही गीतिकाव्य के रूप में स्वीकार किया है। सूक्ष्मतदृष्टि से देखा जाय तो खण्डकाव्य और गीतिकाव्य में केवल शब्द का अंतर है विषय- वस्तु में लेशमात्र भी अन्तर नहीं है। साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ ने लिखा है-

"खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि यत्।"

अर्थात् मानव जीवन के किसी एक पक्ष का वर्णन अथवा अन्तरात्मा के किसी एक ही पटल का चित्रण खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य विषय होता है। परवर्ती विद्वानों ने भी खण्डकाव्य को ही गीतिकाव्य के रूप में स्वीकार

किये है। वैसे खण्डकाव्य का जो गुण या वैशिष्ट्य
बताया गया है, वह प्रचुर मात्रा में संस्कृत के
गीतिकाव्यों में उपलब्ध है। यदि इसकी उत्पत्ति
के सम्बन्ध में विचार करें तो समस्त वैदिक
वाङ्मय ही ऋषियों के गीत हैं। साहित्यदर्पणकार
ने मेघदूत को खण्डकाव्य या गीतिकाव्य का प्रति-
निधि ग्रन्थ माना है। इसमें यक्ष के जीवन के एक
वर्ष की अवधि का ही वियोगात्मक वर्णन है। नवविवा-
हित यक्ष अपनी प्रिया से शापवश अलग हो गया
है। यक्ष के कर्तव्य च्युति के कारण धनपति कुबेर
ने क्रोधवश शाप दिया है। उन्हें क्या पता कि
युवावस्था की मादकता के कारण यक्ष ने प्रमाद-
वश भूल की है। शाप भोगने के लिये यक्ष राम-
गिरि पर्वत पर तथा प्रिया अलका नगरी में है।

"कश्चित्कान्ता - - - - - - - रामगिर्याश्रमेषु ॥"

गीतिकाव्य की सामान्य विशेषताओं के आधार पर जब हम मेघदूत का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि यह संस्कृत वाङ्मय का सर्वोत्तम गीतिकाव्य है। गीतिकाव्य के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसकी आत्मा भाव-अतिरेक होती है। कवि जब-जब किसी सुख या दुःख की तीव्र अनुभूति को शब्दात्मक रूप प्रदान करता है तो वही अभिव्यक्ति गीति-काव्य का रूप ले लेता है। कवि की वह रागात्मक अनुभूति तथा कल्पना से वर्ण्य विषय

Scanned with CamScanner

भावात्मक बन जाते हैं। सामान्यतः साधारण जनों में भी हम पाते हैं कि जब वह किसी विशेष दुःख की अनुभूति से गुजरता है तो ऐसा लगता है कि उसका हृदय उन भावों से पूर्णतया आप्लावित हो गया है। इसलिये वह हृदयोद्गार के रूप में अभिव्यक्त होने लगता है। उसी स्थिति में लोग गाने लगता हैं। वही स्थिति जब कवियों की होती है तो वही गीत रचना में तब्दील हो जाती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि संस्कृत के गीति-काव्य कवियों के हृदयोद्गार हैं। इस प्रकार मेघ-दूत पूर्णतया सरलतम गीतिकाव्य प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि यक्ष के माध्यम से वह स्वयं कवि हृदयोद्गार है। स्वविकता भी इसमें हैं क्योंकि कालिदास ने उस यक्ष का नाम नहीं लिया। केवल 'कश्चिद्' कहकर काल्पनिक रूप दे दिया। गीतिकाव्य के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि विषय का नाम-मात्र आधार हुआ करता है। वस्तुतः उसमें व्यक्ति ही प्रतिबिम्बित होता है। मेघदूत में ऐसा ही हुआ है। यक्ष के वियोग की दशा प्रधान है। उसी सन्दर्भ में आने वाला अन्य भाव व पक्ष के वियोग को ही परिपुष्ट करता है। कवि कालिदास ने अपने काव्य के विषय को कहीं बाहर से नहीं लाया, अपितु अपने ही भीतर से अभिव्यक्त किया गया है

गीतिकाव्य का एक गुण उसकी संक्षिप्तता है। लम्बे होने पर उसकी योग्यता ही समाप्त हो जाती है। मेघदूत में हम पाते हैं कि यह अतिसंक्षिप्त है। इसके दो खण्ड हैं- पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ। पूर्वमेघ में रामगिरि से अलका तक का प्राकृतिक वर्णन तथा उत्तरमेघ में अलका के वैभवशाली तथा यक्षिणी के विरहीदशा का वर्णन है।

गीतिकाव्य का प्रधान गुण है गेयता। यद्यपि काव्य एवं संगीत दोनों अलग-अलग हैं, किन्तु दोनों की अभिव्यक्ति मानव के चरमोत्कर्ष का सूचक बन जाती है। इसे हम कला का समुन्नत रूप ही मानेंगे। काव्य तो अपने आप में मनमोहक होते हैं। अलौकिक चमत्कारजनक तो होना उसका स्वभाव है। यदि उसमें भी गीत का समन्वय हो जाता है तो वह गीतिकाव्य परम रमणीय बन जाता है। इसलिये गीतिकाव्य को सर्वोत्कृष्ट काव्य के रूप में मानते हैं। इस दृष्टि से भी मेघदूत उत्तमकोटि का गीतिकाव्य है।

मेघदूत की शैली कालिदास की स्वभाविकता तथा प्रसादिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें पदों की रमणीयता, स्वरसौष्ठव, माधुर्य, विलास एवं कोमल संगीत-लहरी दर्शनीय है। सारा काव्य मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखा गया है जिसकी मन्द मधुरगति विप्रलम्भ शृंगार के कारण कोमल भाव को व्यंजित करने में विशेष सहायक सिद्ध हुए हैं। मेघदूत की कमनीयता को देखकर कुछ आलोचक कहते हैं-

मेघे माघे गतं वयः।

Scanned with CamScanner